Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
UGC Approved Sr.No.64259
Vol - V Issue-IV APRIL 2018 ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

रचना कौशल विकास हेतु रचनात्मकतावादी अध्यापन विधियां

प्राचार्या डॉ. उर्मिला एम.धूत
शोध मार्गदर्शक
शा.अ.महाविद्यालय, परभणी

श्रीम.क्षमा योगेश करजगांवकर
शोधकर्ता
स्वा.रा.ती.म.वि.नांदेड

सारांश :

छात्रो के भाषा ज्ञान में निखार व पूर्णता लाना भाषा-शिक्षा का प्रमुख उद्देश है। छात्रों को शब्दों, सूक्तियों, मुहावरों, विभिन्न लेखन-शैलियों आदि का क्रमबध्द ज्ञान कराया जाता है ताकि उनकी अभिव्यक्ति में क्रमबध्दता एवं प्रभावपूर्णता आ सके। इन सभी तत्त्वों आदि का ज्ञान कराना तथा भाषाई क्षमताओं को क्रमबध्दरूप विकसित करना ही रचना-शिक्षण के उद्देश है। इन उद्देश्यों को विद्यालई शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर क्रमित रूप से छात्रो की मानसिक क्षमता, रूचि आदि को ध्यान में रखते हुए विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। अध्यापको का कर्तव्य है कि वे कक्षा में उचित वातावरण का निर्माण कर तथा उचित रचना-शिक्षण विधि एवं प्रक्रिया को अपनाकर विद्यार्थियों की सृजनात्मक शक्ति को पहचानें एव उन्हें विकसित करने में पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

भाषा अध्यापन का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य छात्रों में स्वतंत्ररूप से भाषा का प्रयोग करने की क्षमता का निर्माण करना होता है। लिखित या मौखिक रूप से अभिव्यक्त करने का प्रयत्न करता है तब उसे रचना कहा जाता है। रचना में सबसे प्रमुख तत्त्व अभिव्यंजना में रचनाकार का योगदान है। इस योगदान में जितनी चमत्कृति, जितनी नवीनता, प्रभावशीलता, संप्रेषणशीलता होती है, वह रचना उतनी ही अच्छी होती है। जीवन में भाषा का स्वतंत्र रीति से प्रयोग करने की क्षमता उत्पन्न करने के लिए रचना शिक्षा आवश्यक है। रचना शिक्षा के द्वारा छात्रों की लिखित एवं मौखिक अभिव्यक्ति प्रभावपूर्ण होने में सहाय्यता होती है।

रचना पाठ मौखिक तथा लिखित प्रकार के होते है तथा दोनों ही प्रकारों का स्वरूप नियंत्रित व स्वतंत्र होता है। नियंत्रित रचना पाठ में सुचना के आधार पर वाक्य परिवर्तन, प्रसंग वर्णन, वार्तालाप, चित्रणवर्णन, मुख्य बिंदुओ व दी गई शब्दावली के आधार पर लेखन या वर्णन करना होता है, जबकि स्वतंत्र रचना पाठ में बिना किसी नियंत्रण के कहानी, वर्णन, पत्रलेखन, निबंध, विचार-विस्तार, आत्मकथा, जीवनी, वृतांत, विज्ञापन, संवाद-लेखन किया जाता है। द्वितीय भाषा हिंदी के रूप में उपरोक्त प्रकार की रचना विद्या के लिए आवश्यक है कि छात्रों की मानसिक विकास अवस्था को ध्यान में रखा जाये। जो भी रचना विषय चुने जायें वे छात्रों के अनुभव जगत से जुडे हों। किसी भी विषय पर पहले मौखिक चर्चा की जाये ताकि छात्र विषय-विस्तार की सीमा से परिचित हो जायें। उसके उपरांत ही रचना-पाठ का लेखन हो। रचना के विषय आरंभ में सरल और दैनिक जीवन के अधिक निकट के हो, धीरे-धीरे फिर विषयों में जटिलता, कल्पनात्मकता और विविधता लाई जाये। मौखिक रचना में शुध्द व पूर्ण वाक्यों में बोली जाने वाली हिंदी का ही स्वीकार किया जाये।

रचना-शिक्षण में रचना कौशल विकसित करने के लिए विभिन्न प्रणालियाँ प्रयुक्त होती है जैसे कि-

१.	**अनुसरण प्रणाली**	**८.**	**समवाय प्रणाली**
२.	शब्द-प्रधान विधि	**९.**	समीक्षा प्रणाली
३.	प्रवचन प्रणाली	**१०.**	प्रश्नोत्तर प्रणाली
४.	विचार-विमर्श प्रणाली	**११.**	चित्र वर्णन प्रणाली
५.	मन्त्रणा प्रणाली	**१२.**	भाषायन्त्र प्रणाली
६.	स्वाध्याय प्रणाली	**१३.**	उद्‌बोधन प्रणाली
७.	तर्क या वाद-विवाद प्रणाली	**१४.**	रूपरेखा प्रणाली

रचना के विविध प्रकारों के आधार पर तथा छात्रों की बौद्धिकता भांपते हुए अध्यापन में इन विधियों का उपयोग किया जा सकता है।

१) निबंध लेखन :

निबंध किसी विषय के लिए मुक्त अभिव्यक्ति लिखने का ढंग महत्त्वपुर्ण होता है। विचारों की श्रृंखला, क्रमबद्धता तथा सुसूत्रता निबंध को आकर्षक बनाती है। छात्र व्यक्तिगतरूप से बहुत बार किसी विषय के लिए स्पष्ट नहीं होता है। ऐसे समय में ४-५ छात्रों का दल बनाकर

शिक्षक निबंध की रूपरेखा पर चर्चा कर सकते है। दल के छात्र अपने अपने अनुभवों के आधार पर आशय विस्तार करके गटनेता की मद्द से सुव्यवस्थित ढाँचे में ढालकर निबंध प्रस्तुत कर सकते है। इस प्रकार से सहकार्यात्मक अभ्यास तथा विचारों के आदान-प्रदान से छात्र ज्ञानप्राप्ति की दिशा में अग्रसर होंगे।

२) वार्तालाप (संवाद) :

दो या अधिक व्यक्तियों द्वारा समाज में माध्यम 'संवाद' है। व्यक्ति संवाद के माध्यम से एक दूसरे को जान-पहचान सकते है, साथ ही अपने विचार दूसरों तक पहुँचा सकते है। बातचीत करते समय सरल व सुबोध शब्दों तथा छोटे-छोटे वाक्यों का उपयोग किया जाना चाहिए। वार्तालाप के लिए 'सरलता से जटिलता की ओर' यह सूत्र उपयोगी होता है। छात्रों के पास हिंदी भाषा का शब्द भंडार अधिक न होने के कारण वाक्य विन्यास में कठिनाई आती है। अतः घरेलू बातचीत के द्वारा धीरे-धीरे आगे बढा जा सकता है।

३) कहानी लेखन :

कहानी लेखन नियंत्रित अथवा स्वतंत्र हो सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि छात्र कारक चिन्हों तथा विरामचिन्हों से भलीभांति अवगत हो। शिक्षक व अन्य छात्र मिलकर मौखिक कहानी रचना कर विशेष चिन्हों पर चर्चा करके, भाव-भंगियों द्वारा भावनात्मक रूप से कहानी के मर्म तक पहुंच सकते है। इस प्रकार से छात्रों का कहानी को लेकर कल्पना-जगत विस्तारित होगा।

४) वृतांत लेखन :

अखबारों में आए हुए विभिन्न वृत्तांत के पर्चे पढवाकर इतिवृत्त लेखन के नियमों से छात्रों को परिचित कराया जाना चाहिए। छात्रों द्वारा उनके आसपास घटित घटना का वृतांत लिखवाकर आत्मविश्वास में वृद्धि की जा सकती है। तत्पश्चात पाठ्यक्रम में निहित विषयों के वृतांत तैयार करवायें जा सकते है। मौखिक वृतांत सुनकर भी नियमों से अवगत कराया जा सकता है। इतिवृत्त की भाषा सरल, अनलंकृत, छोटे-छोटे वाक्यों से युक्त और एक ही अर्थ को व्यक्त करने वाली होनी चाहिए।

५) चित्र वर्णन :

चित्र-क्रमों के आधार पर निरीक्षण करके मुख्य बिंदुओं को उजागर किया जाना चाहिए । चित्र पर चर्चा करते समय एक समय में एक ही प्रसंग चित्र खुला होना चाहिए ताकि छात्र केंद्रित होकर ज्यादा से ज्यादा विचार प्रवृत्त हो। प्रश्नोत्तर, तर्क व विमर्श, अनुकरण, शब्द प्रदान इत्यादि विधियों का उपयोग करके छात्रों को रचना के प्रति प्रवृत्त किया जाता है।

६) सारलेखन :

किसी परिच्छेद का सारांश लिखना नियंत्रित रचना प्रकार है। मूल परिच्छेद की मूल संकल्पना को समझते हुए अपने शब्दों में सार लेखन करना आवश्यक है। इसके लिए पथ प्रदर्शन प्रणाली, सूत्र विधि द्वारा छात्रों को परिच्छेद के सार का स्वरूप बतलाया जा सकता है। मुख्य बिंदु द्वारा सार विस्तार किया जाना चाहिए। अतिरिक्त शब्दावली हेतु शिक्षक सहाय्यक की भूमिका में मदद कर सकते है।

७) पत्र लेखन :

पत्र लेखन का संबंध व्यक्ति के दैनिक जीवन से निकट का होने के कारण पत्र-लेखन की शिक्षा रचना-शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण भाग है। पत्र-लेखन की कला नियमबध्द अध्ययन है। अतः उद्‌गामी पध्दति का उपयोग करके तर्काधिष्ठितरूप से पत्र लेखन की शिक्षा दी जानी चाहिए। पत्र के प्रकार पर आधारित तंत्र का परिचय देकर आसान एवं अवगत शब्दावली के द्वारा सटिक कलेवर तैयार करवाया जाना चाहिए। अनावश्यक मजमून पर चर्चा करके उन्हें पत्र से हटाया जा सकता है।

निष्कर्ष :

छात्रों को रचना-कौशल के उचित विकास में अनेक कठिनाइयाँ आती है। इन कठिनाइयों की ओर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। निबंध, पत्र, कहानी इत्यादी की रचना संबंधी कुछ अशुध्दियाँ देखने को मिली है जिसके अनेक कारण हो सकते इनमें से कुछ इस प्रकार है- १) संशोधन कार्य का अभाव २) मौखिक रचना का अभाव ३) रचना-निर्देश में अस्पष्टता ४) स्वाध्याय का अभाव ५) लेखन कार्य एवं

गृहकार्य का अभाव ६) रचना करते समय असावधानी ७) रचना करने में अतिशीघ्रता ८) भाषा एवं व्याकरण सम्बन्धी अज्ञानता ९) अध्यापक की रचना में अरूचि। अतः यहाँ अध्यापक का प्रयत्नशील रहना अनिवार्य हो जाता है, तभी इन त्रुटियों को दूर किया जा सकता है।

सर्जनशील लेखन रचना शिक्षा का महत्त्वपूर्ण भाग होने के साथ ही यह विचाराभिव्यक्ति का अत्यंत प्रभावी माध्यम है। अतः भाषायी कौशल को बढाने के लिए अलग-अलग तरीकों को अपनाना जरूरी हो जाता है। छात्रो को प्राप्त होने वाले अनुभवों, रेजमरा की घटनाओं तथा संबंधित संदर्भो के द्वारा ज्ञानविस्तार किया जाना चाहिऐ, जो लगातार ज्ञान निर्माण में मददगार साबित होता है। रचना शिक्षा हेतु रचनात्मकतावादी अध्यापन विधि जटिल तथा अरूचिपूर्ण संकल्पनाओं को भी आसान और आकर्षक बनाने में सहाय्यक है।

संदर्भ सूची :

१. राधा शर्मा (२००७), हिन्दी शिक्षण, संजय प्रकाशन, दिल्ली।
२. स.रा.केणी एवं ह.कृ.कुलकर्णी (१९९२), हिंदी अध्यापन पध्दति, व्हीनस प्रकाशन, पुणे।
३. विद्या निवास मिश्र (२००१), हिंदी और हम, ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली।
४. डॉ. अरविंद दुनाखे एवं डॉ. अंशुमती दुनाखे (२००७), द्वितीय भाषा हिंदी आशयुक्त अध्यापन, नित्यनूतन प्रकाशन, पुणे।

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com